3.3.2 (Supporting Documents)

Faculty Member's Books/Edited Books in Chapter

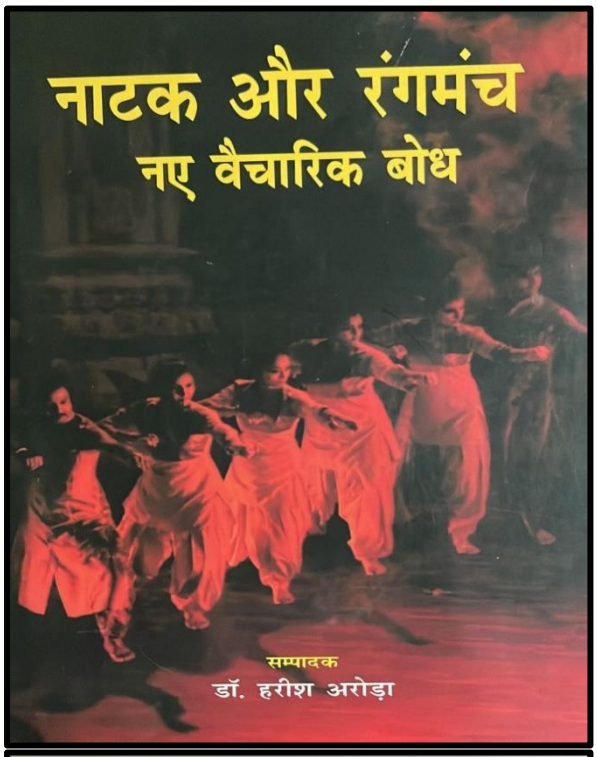

अनुक्रम

	भूमिका	v
1.	हिन्दी नाटक एवं रंगमंच **सुरेश गौतम**	13
2.	रंगमंच, ललित कलाएँ और सूचना प्रौद्योगिकी **नरेन्द्र मोहन**	37
3.	नए दौर का हिंदी नाटक **प्रताप सहगल**	44
4.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक और दलित विमर्श **चैनसिंह मीणा**	55
5.	रंगमंच का अभिनेता बनाम सिनेमा का एक्टर **आशा शर्मा**	67
6.	सत्ता विमर्श बनाम 'निज' का सवाल : कबिरा खड़ा बाज़ार में **विपिन शर्मा अनहद**	73
7.	कहानी के परिदृश्य में रंगमंच की परिभाषा **भावना शुक्ल**	81
8.	संवाद के भीतर संवाद : नाटक का अंतर आख्यान **हर्षबाला शर्मा**	88
9.	समकालीन रंगमंच और नए विमर्श **जितेंद्र मकवाना**	94
10.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाट्य यात्रा **माजिद मियाँ**	97
11.	नाट्यानुभूति और रंगानुभूति **मणि कुमार**	103

© लेखक

ISBN : 978-93-82597-50-6

प्रकाशक
साहित्य संचय
बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडी, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2017
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 995/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 20/- (अन्य देश)

NATAK EVAM RANGMANCH : NAYE VAICHARIK BODH,
Edited by Dr. Harish Arora

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित, आवरण सज्जा **नसीर अहमद** तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

सत्ता-विमर्श बनाम 'निज' का सवाल कबिरा खड़ा बाजार में

विपिन शर्मा अनहद
vipinsharmaanhad82@gmailAcom

एक जगह विस्सावा शिम्बोर्स्का ने लिखा था 'सबसे जरूरी सवाल हमेशा बचकाने ठहरा दिए जाते हैं।' यह बात 'कबिरा खड़ा बाजार में' को पढ़ते हुए कई बार जेहन में आती है। ढेर सारी कृतियाँ कालजीवी होकर रह जाती हैं। लेकिन कुछ कृतियाँ कालजयी होकर क्लासिक में परिवर्तित हो जाती हैं। यह सब निर्भर करता है उस अपील में जो समय के निश्चित कालखंड के पार जाने की क्षमता रखती है। यह सब होता है सार्वकालिक और सार्वभौमिक प्रश्नों को ईमानदारी से रेखांकित करने की प्रक्रिया में। समय फिल्टराइजेशन का काम करता है। तभी 1981 से लेकर आज तक कबिरा खड़ा बाजार में दर्शक एवं पाठक समूह दोनों की ही दृष्टि से समय के महत्त्वपूर्ण सवालों को उठा रहा है। एक कलाकार, लेखक का संघर्ष और आत्मसंघर्ष कभी समाप्त नहीं होता, वह एक सतत प्रक्रिया है जो निरंतर प्रवाहमान है। यह संघर्ष दो स्तरों पर होता है। पहले तो निज के स्तर पर व्यक्ति स्वयं से जूझता है। अपने अंदर से उमड़ रहे सवालों को समझने का प्रयास करता है। स्वयं से मुठभेड़ की प्रक्रिया में कहीं सिरजती है। रचना सृजन के पश्चात उसे जनसमूह के सामने अपनी उपादेयता सिद्ध करनी होती है। कृति को अस्वीकृति के दौर से भी गुजरना पड़ता है। मार्क्स ने इस बात को वाद-विवाद-संवाद के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है। अपनी प्रस्थापना में संवाद की निर्मिति में वाद विवाद को भी महत्त्वपूर्ण माना है। यह वाद-विवाद ही असहमति का स्वर है। इस असहमति के कारण ही सुकरात को जहर पीना पड़ता है, गैलेलियो को चर्च का कोपभाजन बनना पड़ता है, मार्क्स जीवन-भर देश-निकाले की

प्राचार्य
पूरन सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव

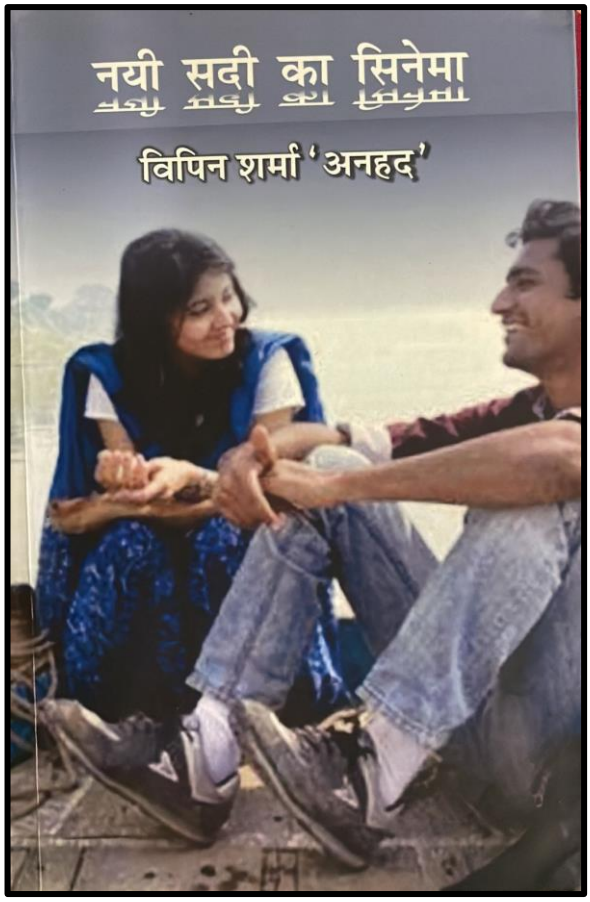

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटो कापी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक / प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2018

ISBN 978-93-86810-13-7

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली–110 032
email: anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011–22825424, 09350809192
www.anuugyabooks.com

मूल्य : 250.00 रुपये

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली–32

NAI SADI KA CINEMA *by* Vipin Sharma 'Anhad'

अनुक्रम

भूमिका–विजय शर्मा 7
हो गयी पिक्चर शुरू 13

सिने आख्यान

1. कामसूत्र : पुरुष सत्ता के चाबुक से स्त्री की पीठ पर लिखा गया क्रूर शोषण का दस्तावेज 21
2. रेनकोट : पर्दे पर रचा उदास राग 32
3. विचारों और परम्पराओं का फर्क–स्लम डॉग मिलेनियर एवं दिल्ली-6 40
4. रोडमूवी एवं वेल डन अब्बा : जल-संकट को दूर करने के झूठे राजनैतिक आश्वासनों के विरुद्ध खड़ी दो फिल्में 45
5. 'थैंक्स माँ' – फुटपाथ पर बचपन 52
6. जिन्दगी ना मिलेगी दोबारा : सम्बन्धों का उत्तर-आधुनिक समाजशास्त्र 57
7. गुजारिश : एक असम्भव प्यार की कविता 63
8. लंच बॉक्स : टिफिन के मार्फत मध्यवर्ग के जीवन का अंतरंग 73
9. सात खून माफ : सेल्युलाईड पर रचा स्त्री जीवन का सघन पाठ 82
10. वार छोड़ो ना यार : युद्ध के पीछे की शक्तियों की शिनाख्त 94
11. बजरंगी भाई जान : बिछुड़ गये थे जो तूफाँ की रात में 99
12. शिप ऑफ थीसियस : जिंदगी का बहुवर्णी कोलाज 105
13. मसान : शोकगीत के पार जिन्दगी 112

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

1

हो गयी पिक्चर शुरू

सिनेमा जिन्दगी को समझने का एक सशक्त माध्यम है, जिन्दगी जिसे हम जीते हैं, समय के एक फ्रेम में जिये समय का लेखा-जोखा है। हमेशा कहा जाता रहा– फिल्मों ने युवा पीढ़ी को बर्बाद कर दिया, गाँधी फिल्म को एक दुर्गुण के रूप में देखते रहे। चार्ली चैपलिन से मिलने के बाद भी उनकी धारणा शायद ही बदल पायी हो, लेकिन धार्मिक फिल्मों के प्रति उनका रुझान अवश्य रहा। स्वाधीनता आन्दोलन और सिनेमा के विकास का दौर समानान्तर चलता रहा, धुंडीराज गोविन्द फाल्के की हरिश्चन्द्र एवं आदेर्शीर ईरानी की आलमआरा ने चलते-फिरते चित्रों के माध्यम से लोगों की दुनिया ही बदल दी। हंटरवाली, बूटपालिश से लेकर आज तक चलते-फिरते चित्रों का जादू नहीं टूटता– दिन-ब-दिन बढ़ता ही जाता है। सिनेमा भारत की दृष्टि से महज़ मनोरंजन नहीं, बल्कि देश के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास और मनोविज्ञान को जानने का माध्यम है।

शायद इस देश का दर्शक आन्द्रेई तारतोवस्की और ईरानी सिनेमा की कलात्मक बारीकियों के बारे में न जानता हो फिर भी वह अपने जीवन का रसायन सिनेमा से ही लेता है। प्यासा जैसी कलात्मक फिल्म में जॉनी वाकर द्वारा गाये गीत को वह सुनता है 'सर जो तेरा चकराये, और दिल डूबा जाये/ आ जा प्यारे पास हमारे/ क्यों न आजमाये/ दर्द बाय-बाय, इस गीत में, वह चम्पी का जादू ही था जो दशकों-दशक तक दर्शकों को लोट-पोट करता रहा। यह तख्ते ताजों की दुनिया ...से समीक्षक मोहित होते रहे मगर दर्शक के लिए तो मनोरंजन ही सर्वोपरि है। सन्देश हो तो सोने पर सुहागा। दर्शकों को तो गुरुदत्त की उदासी एवं वहीदा के सौन्दर्य में ही पनाह मिलती रही। राजकपूर, देवानन्द, दिलीप की तिकड़ी ने तो सिनेमा के मायने ही बदल

प्राचार्य
फूल सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव

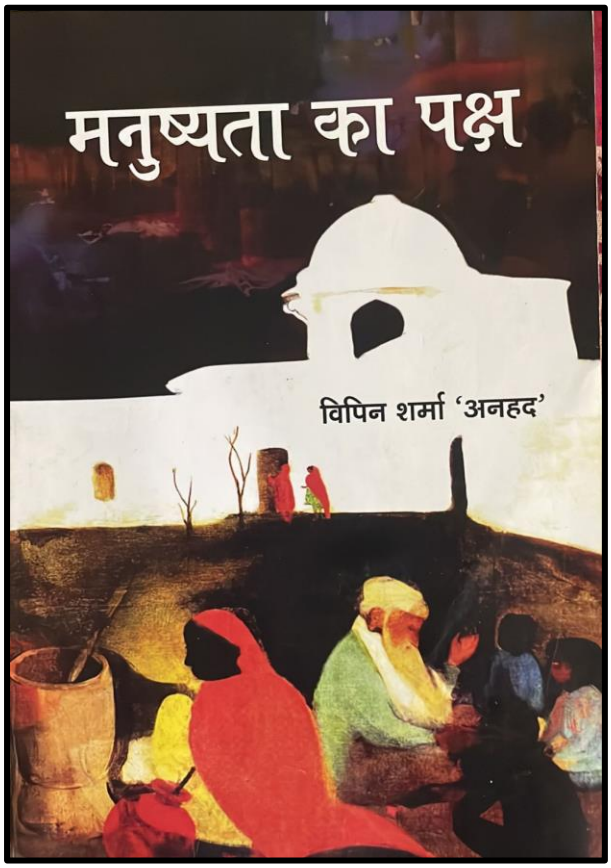

मनुष्यता का पक्ष

ISBN : 978-93-85689-47-5

प्रथम संस्करण : 2018

© विपिन शर्मा 'अनहद'

मूल्य : ₹ 150/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753 सुभाष पार्क नवीन शाहदरा
नई दिल्ली-110032 (भारत)

संपर्क : **+91-9971017191, 9899828223**
ई मेल : **yashpublicationdelhi@gmail.com**
बेबसाइट : **www.yashpublications.com**

डिस्ट्रीब्यूटर : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
Avilable at : amazon.com, flipkart.com

मुद्रक : यश प्रेस यूनिट, दिल्ली

विषय–सूची

दो शब्द 7
हिंसा के बरक्स मनुष्यता का पाठ 9
स्याह रंग के विरुद्ध/मेरी बात 13

मनुष्यता के संकटों के बीच कविता

1. विश्व शांति की तलाश में : भवानी प्रसाद मिश्र 17
2. प्रतिरोध विहीन समय में हस्तक्षेप की निर्मिति : लीलाधर जगूड़ी का कविता संसार 28
3. कठिन समय में उजास की बात : राजेश जोशी की कविता पर कुछ नोट्स 30
4. विनोद कुमार शुक्ल की कविता का अन्तःकरण 39
5. आमफ़हम चीजों में उम्मीद का कवि–वीरेन डंगवाल 48

भीष्म साहनी : साझे स्वप्न का पैरोकार

6. दो गज़ ज़मीं न मिली, कू–ए–यार में 55

सरहद के पार रचना संसार

7. जिसकी कविताओं को उससे भी ज्यादा प्यार मिला: पाब्लो नेरूदा 65
8. शब्दों का जादूगरः गाब्रिएल गार्सिया मार्केज़ 72

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

हिंसा के बरक़्स मनुष्यता का पाठ

विपिन कुमर शर्मा की यह बहुप्रतीक्षित पुस्तक इस रूप में महत्वपूर्ण है कि यह उपनिवेशवाद एवं सांस्कृतिक वर्चस्ववाद का प्रतिपाठ रचती है। विपिन शर्मा बहुआयामी विषयों पर एक साथ लेखन कर रहे हैं। वह कहानियाँ लिखते हैं और समीक्षा करते समय उनके भीतर का रचनाकार उन्हें और कई स्थानों और रचनाओं तक यात्रा कराता है। वह एक सजग पाठक के रूप में हिंदी और भारतीय भाषाओं के ही नहीं विश्व की अनेक भाषाओं के साहित्य के पाठक हैं। हिंदी में अनूदित भारतीय और विश्व साहित्य के पाठक होने के कारण एक साथ वैश्विक और भारतीय तथा हिंदी जगत के समकालीन मुद्दों पर उनकी पारखी नजर जाती है। हिंदी कविता और गद्य के गंभीर मुद्दों को इस पुस्तक में उन्होंने उठाया है। हाल के दिनों में साहित्य समीक्षा के भीतर के तंतुओं और समय समाज पर भी वह बात करते हैं। 'मनुष्यता का पक्ष' वर्तमान रचनाकर्म और रचनाकार के सामने उपस्थित स्थितियों पर तफ़्सील से बात करती है।

'मनुष्यता का पक्ष' पुस्तक में तीन खंडों में से प्रथम खण्ड मनुष्यता के संकटों के बीच कविता में समय–समय पर प्रकाशित आलेखों का संचयन है। प्रथम खंड हिंदी के साहित्यकारों पर केन्द्रित है और ये सभी साहित्यकार समकालीन रचनाधर्मिता में अपनी गहरी पकड़ रखते हैं। जनसरोंकारों के संदर्भ में उनकी प्रतिबद्धता असंदिग्ध है। समीक्षक ने इन रचनाकारों के लेखन के केन्द्रीय मर्म को छुआ है। 'विश्व शांति की तलाश में : भवानी प्रसाद मिश्र' पुस्तक का प्रथम लेख है। 'युद्ध का नाम जुबान पर मत आने दो' कविता में वह ऐसे मानव समाज की तलाश करते दिखाई देते हैं जो युद्ध का विरोध करे। जिससे युद्ध के गुण गाने वालों को चुप किया जाये। इस खंड का द्वितीय आलेख समकालीन कविता में विशिष्ट वस्तु–रचना शैली के लिए प्रसिद्ध लीलाधर जगूड़ी के कविता संसार पर केन्द्रित है। जगूड़ी अपने समय में सशक्त हस्तक्षेप ही नहीं करते अपितु रचनाधर्मिता के पक्ष में और आम मनुष्य के पक्ष में निरंतर कविता को एक हथियार की भांति प्रयोग करते हैं। 'कठिन

प्राचार्य
पूरब सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव

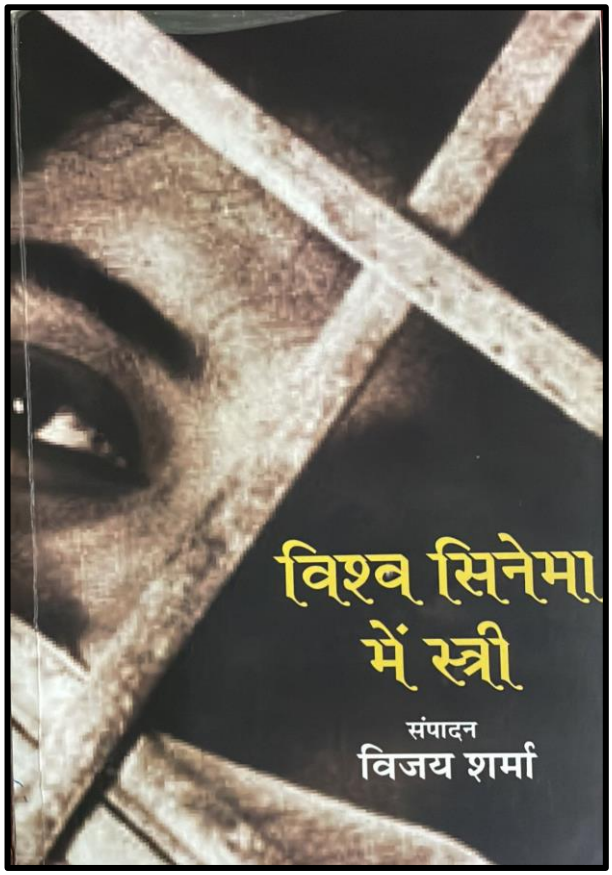

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटो कापी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक / प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© संपादक

प्रथम संस्करण : 2018

ISBN 978-93-86810-34-2

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं 1, वेस्ट गोरख पार्क
शाहदरा, दिल्ली–110 032
फोन : 011–22825424, 09350809192
www.anuugyabooks.com
email: anuugyabooks@gmail.com

मूल्य : 250.00 रुपये

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली–32

VISHWA CINEMA MAIN STREE *edited by* Vijay Sharma

13. पार्च्ड : पितृ सत्तात्मक व्यवस्था को पलटने का साहस — *विपिन शर्मा* 124
14. चुटकी भर सिन्दूर से उठते कुछ सवाल (सिनेमा में स्त्री: फिल्म 'अर्थ' और 'क्वीन' के विशेष सन्दर्भ में) — *आशीष कुमार* 132
15. मैड मैक्स : फ़्यूरी रोड एक्शन मूवी नारीवादी फिल्म हो सकती है — *अनघा मारीषा* 140
16. मेघे ढ़ाका तारा : एक स्त्री का अन्तहीन संघर्ष — *अजय मेहताब* 143
17. डांसर इन द डार्क : एक क्लासिक तथा कालजयी फिल्म — *सी. भास्कर राव* 149
18. वाटर : विधवा जीवन की बहुआयामी यातनाओं का दस्तावेज — *धनंजय कुमार चौबे* 160
19. बाग़वान : परिवार की धुरी — *अभिषेक शर्मा* 166
20. कॉरपोरेट : व्यूह में स्त्री — *नीलम कुलश्रेष्ठ* 170
21. सिने-विमर्श की जानिब से स्त्री के विवाहेतर सम्बन्ध — *सत्यदेव त्रिपाठी* 176
22. चाँदनी बार : रोशन जहाँ की अँधेरी गलियाँ — *कल्पना पन्त* 187
23. द जापानीज़ वाइफ़ : एक हाइकु — *आभा विश्वकर्मा* 193
24. द नेमसेक : तब्बू बनाम प्रवासी आशिमा — *ऋतु शुक्ल* 20१
25. पुनश्च : सिर उठा कर जीने की तमन्ना — *विजय शर्मा* 213

सहयोगी 221

पार्च्ड : पितृ सत्तात्मक व्यवस्था को पलटने का साहस

विपिन शर्मा

(1)

स्त्री विमर्श अथवा स्त्रीवाद आज ऐसे दौर में पहुँच गया है जहाँ आधी आबादी का एक हिस्सा आनन्द के अतिरेक में डूबा है, अर्थ और शरीर को भी आनन्द प्राप्ति का औजार बना लिया गया है, अथवा ऐसा दिखाया जा रहा है मानो आनन्द का चरम आपसे बित्ते भर दूर है। उदारीकरण के बाद एक नये किस्म की विश्व-व्यवस्था से हमारा परिचय होता है, जहाँ स्त्री कभी शराब के फेनिल झागों में तब्दील हो जाती है, कहीं क्रिस्टल ग्लास में एवं कहीं किसी उत्पाद को बेचने के लिए कामुकता की चासनी में लिपटी आदिम सी अपील करती हुई। वैसे यह उत्तर आधुनिकता के युग में बाजार केन्द्रित विमर्श ज्यादा है। मुख्यधारा का मीडिया खाती-पीती स्त्रियों को आधार बनाकर 'पॉवर वीमेन' की छवि गढ़ता है। लेकिन अदृश्य अन्धेरे हाशियों, गाँव देहात में जी रही महिलाओं की ओर उसका ध्यान नहीं जाता। विकास से वंचित तमाम सुख-सुविधा से महरूम पितृसत्ता के चाबुक तले जीती स्त्रियों की आवाज को उठाने वाला कौन है, भला हो वैचारिक रूप से प्रबुद्ध महिलाओं का जिन्होंने अपनी मुक्ति के संघर्ष को अपनी जिन्दगी जितना ही महत्त्वपूर्ण मानकर शिद्दत से अपनी लड़ाई को लड़ा।

यह संघर्ष आर्थिक-सामाजिक बराबरी का तो था ही, मानसिकता के परिवर्तन का भी था। 1920 के आसपास रचे गये तमिल गीत में ये भाव प्रबलता से अभिव्यक्त होते हैं–

नाचो और खुशियाँ मनाओ
जिन्होंने कहा था
महिलाओं का किताबें छूना पाप है
मर चुके हैं
जिन पागलों ने कहा था

15

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

प्राचार्य
पूज्य सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव

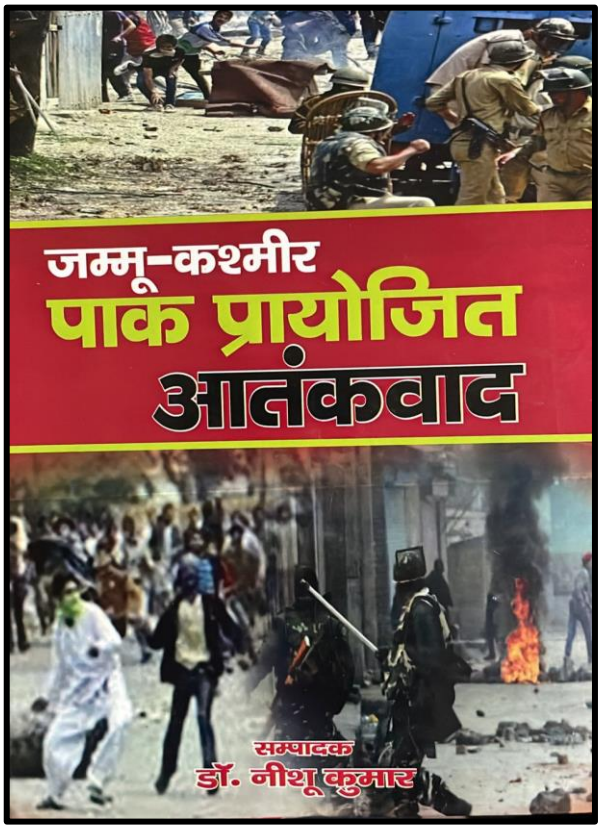

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

जम्मू-कश्मीर : पाक प्रायोजित आतंकवाद

ISBN : 978-93-85981-90-6

प्रथम संस्करण : 2018

© सुरक्षित

प्रकाशक
सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059 मो. 09899665801
ई-मेल : satyampub_2006@yahoo.com

भारत में प्रकाशित

आर.डी. पाण्डेय द्वारा **'सत्यम् पब्लिशिंग सोल्यूशन'**, नई दिल्ली के लिए प्रकाशित। कॉन्वेक्स पब्लिशिंग सोल्यूशन, नई दिल्ली द्वारा टाईप सेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

अनुक्रम

1. जम्मू एवं कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकी गतिविधियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. नीशु कुमार 19
2. भारत पाक युद्ध एवं भारत की सुरक्षा का ऐतिहासिक अध्ययन
डॉ० सत्यवीर सिंह 37
3. जम्मू और कश्मीर में पाक द्वारा प्रायोजित आतंकवाद : एक विश्लेषण
डॉ. अल्का तोमन, डॉ. गिरीराज 63
4. जम्मू–कश्मीर समस्या और आतंकवाद : एक अवलोकन
डॉ. दानवीर सिंह 67
5. अनुच्छेद 370–भारत में आंतकवाद व अलगाववाद की शुरुआत
डा. सूर्य प्रकाश अग्रवाल 78
6. आतंकवादी कश्मीर विश्व शान्ति के लिए खतरा
डॉ. पूनम देवी 86
7. कश्मीर मे बढता अलगाववाद और कश्मीरी पंडितों के पुर्नस्थापन की सम्भावना और चुनौतीया / डॉ. पूनम 94
8. सिनेमा में काश्मीर एवं काश्मीर में सिनेमा
डॉ. विपिन शर्मा 102
9. भारत में आतंकवाद : समस्या एवं समाधान
योगेन्द्र सिंह 108
10. जम्मू और कश्मीर संकट ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
डॉ. प्रतीत कुमार 119
11. भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों में आपसी विश्वास बहारी के प्रयास
राहुल कुमार 125
12. भारत पाक में मध्य जम्मू कश्मीर : एक अवलोकन
नितिन त्यागी, अनुज कुमार भड़ाना 134
13. जम्मू कश्मीर में विस्थापितों की समस्या
बलजीत कौर 137
14. जम्मू–कश्मीर में 'अनुच्छेद–370' समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य
शीतल, प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह 143
15. भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध और कश्मीर समस्याः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. संदीप कुमार, विपिन कुमार 153

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

सिनेमा में काश्मीर एवं काश्मीर में सिनेमा

डॉ० विपिन शर्मा
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग

कश्मीर भारत का स्वर्ग है, पर्वतीय जीवन की जटिलताओं को अपने में समेटे,यह भारत के लिए हमेशा महत्वपूर्ण है। आज कश्मीर की चर्चा जब भी होती है। अशांत क्षेत्र के रुप में होती हैं। देश की बहुसंख्यक आबादी कल्हण, झील, शिकारों आदि के बारे में भूल ही गयी है। उसे बस याद रह गया फौज, बंदूकें, बूटों की आवाज, कश्मीर का सच कैसे हो सकता है। जम्मू–कश्मीर के अधिकत्तम हिस्से आज भी शांत है, मगर कश्मीर अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया से लेकर भारत के मीडिया के केन्द्र में है।

सिनेमा और कश्मीर की कहानी उतार चढ़ाव की कहानी है श्रीनगर का नीलम सिनेमा हाल अपनी कहानी खुद बया करता है, अरसा हो गया उसके एकांत को टूटे हुए, उसने दर्शकों की तालियों हसने कभी सोचा है, वह कैसे धुँआ–धुँआ हो गया। परिवेश में अशांति लोगों में असुरक्षा की भावना भरती है, वह समूह में इक्ट्ठा होने से बचते है, विकास का विमर्श हाशिए पर चला जाता है। 1960 के दौर का कश्मीर के लिए शांति का दौर था, वैसे आजादी के आसपास से ही कश्मीर चीन, पाकिस्तान के लक्ष्य में रहा, अमेरिका भी एशिया में हस्तक्षेप के रुप में वहाँ अप्रत्यक्ष रुप से भूमिका निभाता रहा एक विडम्बना दिखाई देती है, जब कश्मीर में सिनेमा की स्थिति को लेकर एक लेख इंटरनेट पर देख रहा था, बी0बी0सी0 हिंदी कॉम कश्मीर को भारत शासित कश्मीर लिख रहा था, यह स्पष्ट विदेशी शक्तियों के कश्मीर में दबाव को दिखाता है। हिंदी सिनेमा ने कश्मीर को हमेशा सघनता से पर्दे पर रचा है एक ख्वाब सरीखा, हर भारतवासी के लिए वह देहरादून, मेरठ, नैनीताल की तरह, अपना अभिन्न अंग है। शम्मी कपूर की फिल्म जब–जब फूल खिले की शूटिंग कश्मीर में हुई है। 'ये चाँद सा रोशन चेहरा, जुल्फों का रंग सुनहरा' गाने का सौंदर्य बोध केवल नायिका के सौंदर्य से उत्पन्न नहीं है बल्कि कश्मीर के नदी, झरनों,

प्राचार्य
फूल सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव

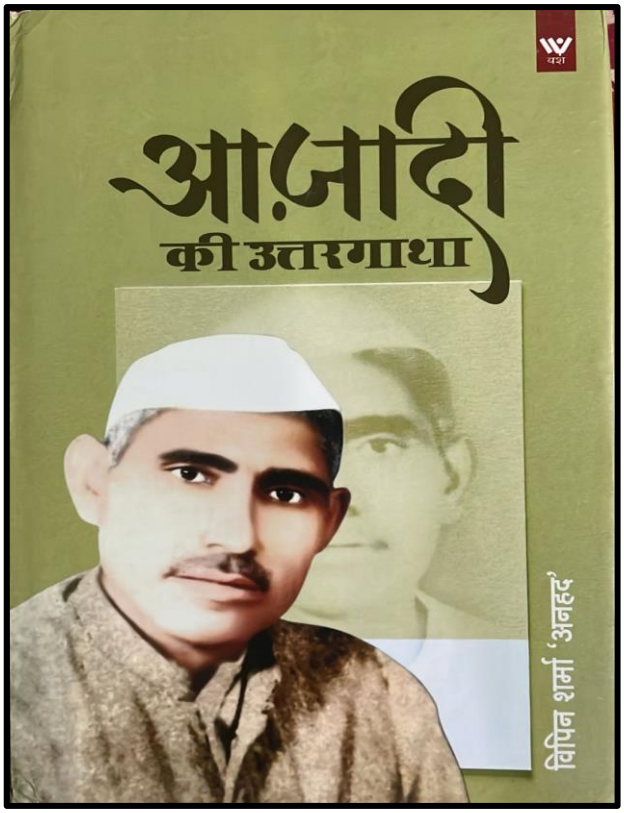

आजादी की उत्तर गाथा

ISBN : 978-93-81130-42-1

प्रथम संस्करण : जनवरी, 2019

© विपिन शर्मा 'अनहद'

मूल्य : ₹ 280/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
1/10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

विक्रय कार्यालय : 4806/24, प्रथम तल,
भरतराम रोड, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002

संपर्क : +91-9599483885, 86, 87, 88
ई मेल : yashpublicationdelhi@gmail.com
बेबसाइट : www.yashpublications.com
Avilable at : *amazon.com, flipkart.com*

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली

अनुक्रम

1
उस जिंदगी के बारे में जो देश की खातिर रही 11
2
'बसंत सिंह भृंग' : लिखत-पढ़त 18
3
'बसंत सिंह 'भृंग' की कविता में संवेदना का धरातल 28
4
बसंत सिंह 'भृंग' के साहित्य में युग-बोध 68
5
अराजकतावाद का यूटोपिया और बसंत सिंह 'भृंग' 86
पूर्वाग्रहों के विग्रह टूटे 98
बात निकलेगी तो 101
कहने और जीने का अद्वैत 104
संदर्भ ग्रंथ सूची 109

अध्याय-एक

उस जिंदगी के बारे में जो देश की खातिर रही

बसंत सिंह भृंग का जन्म 29 सितम्बर 1920 को मेरठ जिले के रासना गाँव में हुआ था। उनके पिता पंडित रामदास गाँव की प्राइमरी स्कूल में अध्यापक थे। पिता व माँ भागीरथी देवी दोनों क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल रहे। "स्वामी सत्यानंद, चंद्रशेखर आजाद, बलदेव चौबे आदि को माँ भागीरथी के हाथों की रोटियाँ खाने का उन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ है।"[1] प्रायः क्रान्तिकारी उनके घर आते रहते थे। जल्द ही भृंग क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे थे और क्रांतिकारी कविताएँ लिखने लगे थे। गाँधी आश्रम में कताई-बुनाई का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए पं. यमुनादत्त की गाथाएँ उनके मन में बस गई। 1939 में वे क्रांतिकारियों के संपर्क में आये और इसके बाद तो वे आजादी की डगर पर निरन्तर बढ़ते चले गये। 1942 में वे भारत छोड़ों आन्दोलन में पूरी तरह कूद पड़े और अपने 12 साथियों के साथ मिलकर नारंगपुर, कतिना, रजपुरा आदि क्षेत्रें में धुंआधार जनसभाएँ करके आन्दोलन को परवान चढ़ा दिया। उसके बाद 'भृंग' अंग्रेजों की नजरों में चढ़ गये। 14 अगस्त 1942 को उन्हें बंदी बनाकर आगरा जेल में डाल दिया। गिरफ्तारी के बाद उनका प्रतिरोध इतना तीव्र था कि सिपाहियों को उन्हें तीन मील तक कंधे पर लादकर ले जाना पड़ा। उन्हें डेढ़ वर्ष की सजा हुई, लेकिन उनकी कविताएँ तो देश प्रेमियों को सतत संघर्ष के लिए प्रेरित करती रही। इसी दौरान बाबूराम व उनके साथियों ने मुजफ़्फ़रनगर की जेल तोड़ दी थी। इसी संघर्ष में कई लोग घायल भी हुएँ "कहा जाता है कि कविता—'पगले तोड़ों जेल से ही इन क्रांतिकारियों को जेल जोड़ने की प्रेरणा प्राप्त हुई'।"[2]

पगले आज तोड़ो जेल, है एक खेल, मत देर लगा। आ गया समय, क्यों मुर्दापन, लो सीने में तूफान जगा। अब तक चक्की पीसी, डंडे खाये, गरा खींचा, कैसी गर्मी, कैसी सर्दी, निशि काटी भू पर पड़े-पड़े; इस भीषण परवशता में फंस, मेरा तन, मन, धन सब सुलगा।

15

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

प्राचार्य
पूरन सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव

ISBN : 978-81-942838-2-9

© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्क
ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनुप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Adhunik Paripekshya Me Gurukul Shiksha Paddati Ka Mahtava
by Dr. Nishu Kumar
Anamika Chauhan

26. प्राचीन भारत की नीति-शिक्षा एवं उसकी आधुनिक शिक्षा में उपयोगिता — 156
प्रीति आर्या
27. गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति नैतिकता, मूल्य, चरित्र निर्माण राष्ट्र निर्माण- एक विमर्श — 162
प्रकृति
28. परंपरा एवं आधुनिकता के मध्य शिक्षा पद्धति — 170
डॉ. उदय पाल सिंह
29. गुरुकुल शिक्षा पद्धति नैतिकता मूल्य, चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण : एक विमर्श — 174
डॉ. विक्रान्त गिर
डॉ. अजयपाल सिंह
30. गुरूकुल शिक्षा पद्धति व आधुनिक परिवेश में इसकी उपयोगिता — 180
डॉ. रवीन्द्र कुमार
31. भारतीय संस्कृति के आधार पर आधुनिक शिक्षा की अवधारणाः एक अध्ययन — 184
डॉ. रूचि सिंह
32. आधुनिक शैक्षिक परिदृष्य के सन्दर्भ में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली में स्थापित गुरू शिष्य सम्बन्धों का महत्व — 190
संजीव कुमार
डॉ. सुशील कुमार
33. गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की भूमिका — 195
देव प्रकाश
34. ''नैतिक मूल्य'' ह्रास के कारणों का अध्ययन — 201
डॉ. अनिता चौहान
35. गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन — 208
सुमन लता तिरूवा
36. 'गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं प्राचीन विश्वविद्यालय' — 213
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा
37. प्राचीन भारत में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का महत्व- — 221
ववीता सिंह
38. नैतिक मूल्य परक शिक्षा की अनिवार्यता और महत्व — 225
विलियम
39. उदारीकरण के दौर में निजीकरण का दबाव एवं विकल्प की अवधारणा : सन्दर्भ शिक्षा एवं गुरूकुल पद्धति — 230
डॉ. विपिन कुमार शर्मा

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

39.

उदारीकरण के दौर में निजीकरण का दबाव एवं विकल्प की अवधारणा : सन्दर्भ शिक्षा एवं गुरूकुल पद्धति

डॉ. विपिन कुमार शर्मा*

आज दुनिया आर्थिक शब्दावली में 'उदार' हो गयी है। उदारीकृत विश्व अर्थात बिना किसी शुल्क-प्रशुल्क के सेवाओं-वस्तुओं की आवाजाही एवं प्रसार। भारत भी 24 जुलाई 1991 को उदारीकृत अर्थव्यवस्था का हिस्सा बन गया। 1980 का दशक भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण नीतिगत बदलाव लेकर आया। सुधारों के इस नए मॉडल को सामान्यतः उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण मॉडल एल.पी.जी. मॉडल के रूप में जाना जाता है। उदारीकरण सरकार के नियमों में आई कमी को दर्शाता है। भारत में आर्थिक उदारीकरण 24 जुलाई 1991 के बाद से शुरू हुआ, जो जारी रखने के वित्तीय सुधारों को दर्शाता है।[1]

वैश्वीकरण की अवधारणा ने चीजों के स्वरूप को बदल दिया, समाज में जहाँ परम्परा और आधुनिकता में द्वंद्व उत्पन्न किया, वहीं सोचनें-समझने चिन्तन के मॉडल को पूर्णतया परिवर्तित कर दिया। निजीकरण की प्रवृत्ति ने लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को प्रश्नांकित कर दिया। ऐसे में शिक्षा के स्थान पर मानव संसाधन है, एक यंत्र एक जरिया धन उत्पन्न करने का। भारत की पुरातन शिक्षा प्रणाली मानवीय मूल्य बाजार द्वारा संचालित शिक्षा प्रणाली व्यवस्था द्वारा ने हस्तगत कर लिये है। कुछ समय पहले तक शिक्षा व्यवस्था पर बात की जाती थी तो

* सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय डिग्री कॉलेज, लम्बगॉव

15

प्राचार्य
पूरन सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव

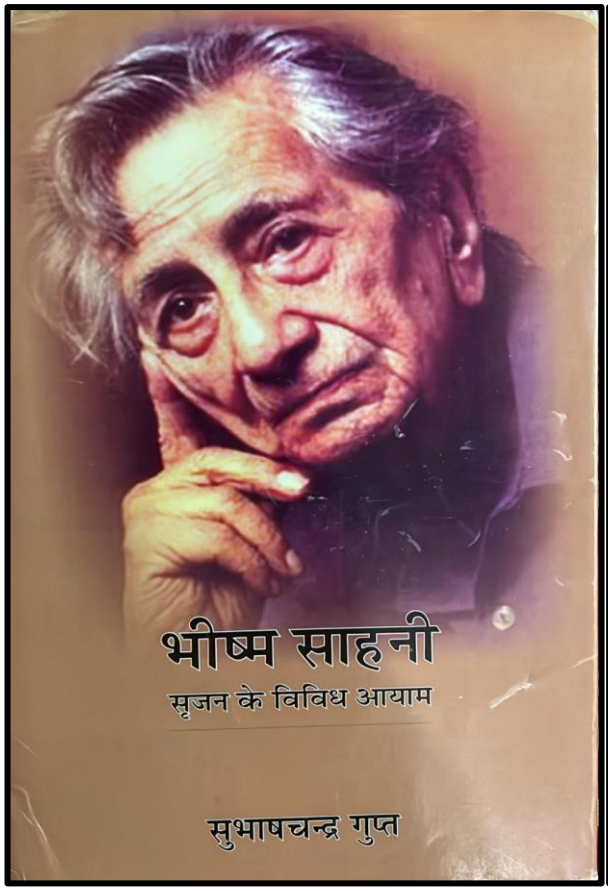

ISBN : 978-93-82699-75-0

© : सुभाषचन्द्र गुप्त

मूल्य : छह सौ रुपये

प्रथम संस्करण : 2019

प्रकाशक : प्रिय साहित्य सदन
2226/बी, गली नं. 33,
पहला पुस्ता, सोनिया विहार,
दिल्ली-110090
मोबाइल : 9211559886

आवरण : मंतोष

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-110093

Bhism Sahni : Srijan Ke Vividh Aayam
By. Subhashchandra Gupt

अन्तर्वस्तु

संपादकीय 7
1. प्रलेस में भीष्म साहनी 29
खगेन्द्र ठाकुर
2. अतीत का आज 47
अरुण कमल
3. धर्म, समाज और भारतीय राष्ट्र (संदर्भ : भीष्म साहनी की कहानियाँ) 52
पंकज पराशर
4. भीष्म जी की संवेदना : हाशिये पर पड़े लोगों की कहानियाँ 67
तरसेम गुजराल
5. दो गज जमीं न मिली कूचे यार में........ 83
विपिन शर्मा 'अनहद'
6. भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संवेदना........ 92
डॉ. पंकज साहा
7. वैश्विक चेतना के कहानीकार : भीष्म साहनी (वाङ्चू और ओ हरामजादे के हवाले से) 97
राहुल सिंह
8. साझी संस्कृति और भीष्म साहनी 102
डॉ. आशुतोष कुमार झा
9. इतिहास के आइने में 'तमस' : जनसाहित्य की धरोहर 113
नमिता सिंह
10. 'झरोखें' (विभाजनपूर्व समाज का दस्तावेज) 131
डॉ. ऋषि कुमार
11. कुंती : स्त्री के उत्सर्ग का विमर्श........ 139
रश्मि रावत
12. सांप्रदायिकता का 'तमस' अभी बाकी है 148
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

दो गज जमीं न मिली कूचे यार में

विपिन शर्मा 'अनहद'

भीष्म साहनी की एक कहानी है **'अमृतसर आ गया है'**, जिसमें दो पठान हैं हंसमुख–जिदांदिल, सरदार जी हैं अपने सहज, सरल स्वभाव के साथ। ट्रेन पर ही सवार–दुबला पतला बाबू है अपने सहयात्रियों की मजाक झेलता, यात्रा में पीछे छूट गये स्थानों को राम का नाम लेकर और पीछे छोड़ता हुआ। यह ऐसा कालखंड है जहां कुछ भी निश्चित नहीं हैं, सरहदें निश्चित नहीं, अपने घर–बार बर्तन–भांडे आदि किसी को भी अपना नहीं कहा जा सकता। रिश्ते–नातों की ऊष्मा कहीं चूक जा रही है, सभी को बस अपनी जान की पड़ी है, यहां पर अमृतसर एक यूटोपिया में बदल जाता है। एक ऐसा सुरक्षित स्थान जहां जान के लाले न पड़ें। मगर वह स्थान है कहां? देश की आजादी से लेकर वर्तमान समय तक भीष्म साहनी का लेखन मनुष्यता के लिए उन सुरक्षित स्थानों की तलाश करता है, जहां आदमी लहूलुहान न हो। विस्थापन से त्रस्त मनुष्यों की पीड़ा को भीष्म साहनी ने खुद भी भोगा। दर–दर भटकने की यंत्रणा केवल उनकी कहानी के पात्रों की नहीं है, बल्कि पेशावर, रावलपिंडी, अंततः दिल्ली में विस्थापित होकर अन्ततः ठौर–ठिकाना पाने की स्थिति सुरक्षित कवचों में जी पानेवाले लोग शायद ही समझ पाएँ। इस बेवतन होने की मनःस्थिति ने उनके जेहन को दायरों में नही बांधा, बल्कि ऐसा कुछ हुआ कि वह देश दुनिया की पीड़ा से स्वयं को जुड़ा हुआ अनुभव करने लगे। ताज्जुब तो होता है जब उन्हें फिलिस्तीन की जनता से भी उतना ही प्रेम महसूस होता है जितना कि इजरायल के बाशिंदों से। जर्मन नाजीवाद के द्वारा पीड़ित एवं विस्थापित होने की यंत्रणा को अपने अन्दर जब्ज कर जीने की कला तो कोई इनसे सीखे, मगर वह जो फिलिस्तीन के साथ कर रहा है, वह भीष्म साहनी की दृष्टि से ओझल नहीं हो जाता। एफ्रो–एशियाई लेखक संघ की यात्राओं के दौरान उन्होंने जनता के दुःख दर्द को करीब से देखा एवं तानाशाहों की ज्यादतियों को भी।

भीष्म साहनी की कहानी के अंतःकरण पर बात की जाये तो देश

प्राचार्य
पूरन सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव

प्रकाशक:

पी.के पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

जे–231/A, गली नं. 14, चौथा पुस्ता,
करतार नगर, दिल्ली–110053

फोन: 9540483251, 79825512449
E-mail: pkpublication@gmail.com

दक्षिणी एशियाई प्रशांत क्षेत्र के स्त्रॉतेजिक वातावरण में भारतीय वैदेशिक सम्बन्ध

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण 2020

आई.एस.बी.एन: 978-81-944558-8-2

भारत में मुद्रित:

पी.के पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली–53 के लिए प्रकाशित एवं शहाब
कम्प्यूटर, दिल्ली–द्वारा शब्द संयोजन तथा सचिन प्रिंटर्स, मौजपुर, दिल्ली
में मुद्रित।

15

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में भारत – अमेरिका रक्षा सम्बन्ध

–डॉ0 भरत सिंह चुफाल

शीत युद्ध के कारण वर्ष 1946 से लेकर 1989 तक सम्पूर्ण विश्व दो प्रमुख गुटों में बँटा रहा। इसी शीत युद्ध काल में सोवियत संघ भारत का स्वाभाविक सहयोगी था। चाहे संयुक्त राष्ट्र में समर्थन का प्रश्न हो या सामरिक सहयोग, हर क्षेत्र में सोवियत संघ ने भारत का समर्थन किया, लेकिन 1991 में सोवियत विघटन के बाद इस स्थिति में काफी परिवर्तन हुआ। सोवियत संघ का उत्तराधिकारी रूस अब आर्थिक एवं सामरिक दृष्टि से कमजोर हो चुका था।[1] दूसरी ओर अमेरिका के विश्व में एकमात्र शक्ति के रूप में उभरने के कारण भारत– अमेरिका सम्बन्धों में बदलाव आना स्वाभाविक था। शीत युद्ध के उपरान्त बनी परिस्थितियों ने दोनों देशों की सामरिक आवश्यकता में सहयोग के दायरे को बढ़ाया, साथ ही साथ आपसी शंका व विरोधाभास को दूर करने का प्रयास किया। इसी क्रम में दोनों देशों ने आपसी रक्षा सहयोग को आगे बढ़ाते हुए जनवरी 1992 में एक आर्मी एक्सक्यूटिव रिटरिंग ग्रुप की स्थापना की और मार्च 1992 में नौ सेना एवं अगस्त 1993 में वायुसेना को इसमें शामिल किया गया। जिससे दोनों देशों

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

प्राचार्य
चूल सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव

किसानों की आत्महत्याओं से सुलगता भारत

समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

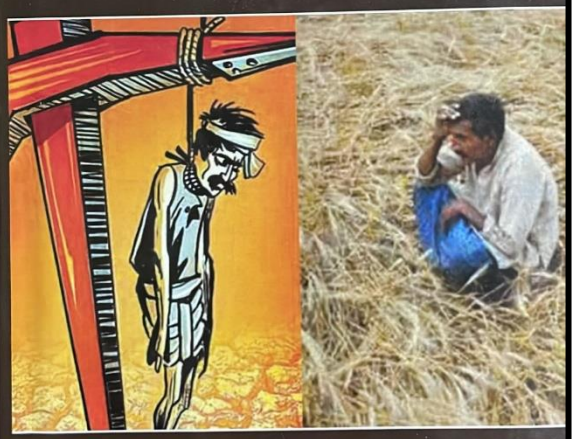

डॉ. नीशू कुमार

© डॉ. नीशू कुमार

प्रथम प्रकाशन–2020

सर्वाधिकार सम्पादक तथा प्रकाशक के अधीन
सुरक्षित हैं।

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

प्रकाशक

प्रशांत पब्लिशिंग हाउस
सी–34, 28 फुटा रोड़ गली न. 3
वेस्ट करावल नगर
दिल्ली–110094
मो : 9810396373, 8826258746
email : prashantpublishinghouse@gmail.com
www.pphbooks.co.in

ISBN : 978-93-88526-34-0

मुद्रक
रोशन आफसेट प्रिंटर्स दिल्ली

अनुक्रम

1 भारत में किसानों की बढती आत्महत्या की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ : एक अवलोकन –डॉ. नीशू कुमार 11
2 कृषि एवं पर्यावरणीय प्रभाव –डॉ. प्रतीत कुमार 23
3 साहित्य में अभिव्यक्त किसान मुद्दे एवं गाँव की उपस्थिति संदर्भ समकालीन हिन्दी कथा साहित्य –डॉ. विपिन कुमार शर्मा 30
4 प्राचीन भारत से लेकर अब तक भारतीय किसानों की स्थिति –डॉ. रणवीर सिंह, डॉ. पूनम 40
5 किसान आत्महत्या : कारण एवं निदान –डॉ. मोनू सिंह 48
6 द्वितीय हरित क्रान्ति को किसान अनुकूल बनाने की रणनीति – डॉ. दीपक राठी 58
7 भारत में किसानों की हालत : एक संक्षिप्त विश्लेषण –अमिताभ भट्ट, डॉ0 विक्रम सिंह 68
8 भारतीय समाज में कृषक : एक अध्ययन –पंकज कुमार, 75
9 बीजों को बचाने के लिए संघर्षरत किसान –डॉ. अलका तोमर, नवीन कुमार 85
10 हरित क्रान्ति या हरित भ्रान्ति, किसानों को कर्ज में डुबाने की साजिश –आशुतोष शर्मा, सुमित कुमार 102
11 "भारतीय किसानों में बढ़ती आत्महत्या की समस्या एवं समाधान"–विशाल कुमार लोधी, नकुल किरन 118
12 "प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक किसानों की दशा का बदलता स्वरूप : एक विश्लेषण" –जितेन्द्र कुमार 137
13 उत्तराखण्ड में कृषि एवं कृषकों की स्थिति एक अध्ययन –डॉ. जया नैथानी 143
14 भारत में किसान आत्महत्या एवं सरकारी प्रयास –डॉ. कवलजीत कौर 154
15 किसानो के उत्थान के लिए केंद्र सरकार एंव राज्य सरकारों

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

3

साहित्य में अभिव्यक्त किसान मुद्दे एवं गाँव की उपस्थिति संदर्भ समकालीन हिन्दी कथा साहित्य

डॉ0 विपिन कुमार शर्मा
मनुष्यता का पक्ष,
आजादी की उत्तरगाथा, नयी सदी
का सिनेमा किताबें प्रकाशित।

वर्तमान समय में किसान स्वयं को दो राहे पर खड़ा अनुभव करता है। एक तरफ गाँव के स्थानिक परिवेश को शहर से चुनौती मिल रही है, वहीं दूसरी ओर अर्थव्यवस्था के अपने दबाव हैं। आज हम भूमंडलीकरण के दौर में हैं। जिसे टामस एल0 फ्रीडमेन अपनी विषालकाय पुस्तकों की श्रृंखला द लैक्सस एंड द ऑलिवट्री, वर्ल्ड इज फ्लैट एवं वर्ल्ड इज नॉट फ्लैट में इस प्रक्रिया को बड़े इत्मीनान से साझा किया है। वह कहते हैं "वैश्वीकरण विश्व के छोटे आकार' को सिकोड़कर उसे और भी छोटे आकार में बदल रहा है। और साथ ही खेल के मैदान को और समतल कर रहा है। वैश्वीकरण की सक्रिय शक्ति थी, विभिन्न देशों का वैश्विक होना। इस प्रक्रिया के पीछे सबसे अलग शक्ति वह यह थी, कि इस युग में अकेला व्यक्ति इतना शक्तिशाली बन गया कि अकेला ही पूरी दुनिया के साथ सहयोग और

प्राचार्य
चूल सिंह पिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव

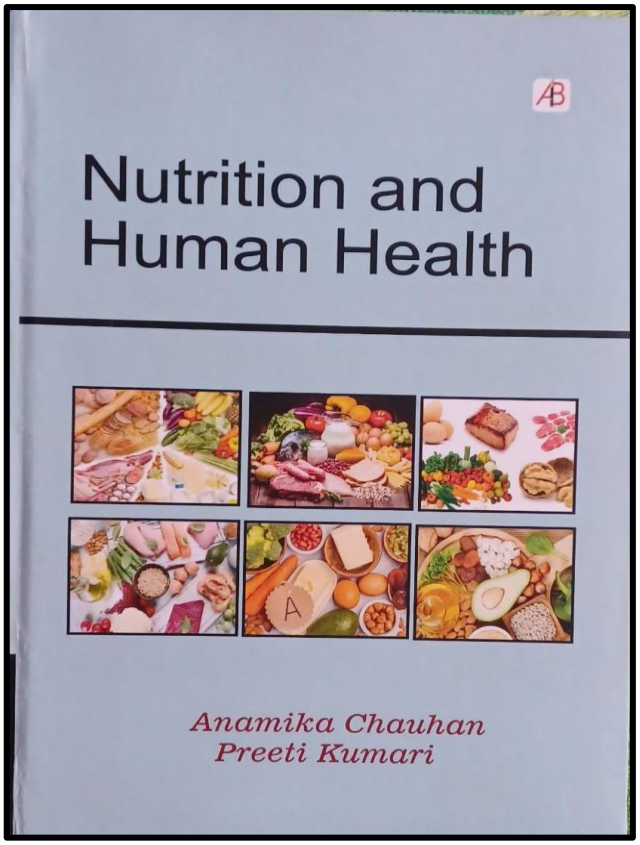

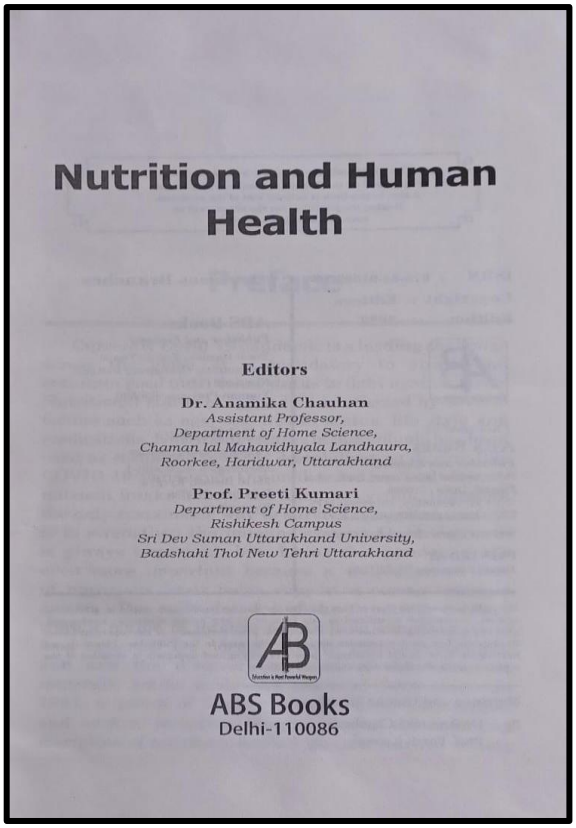

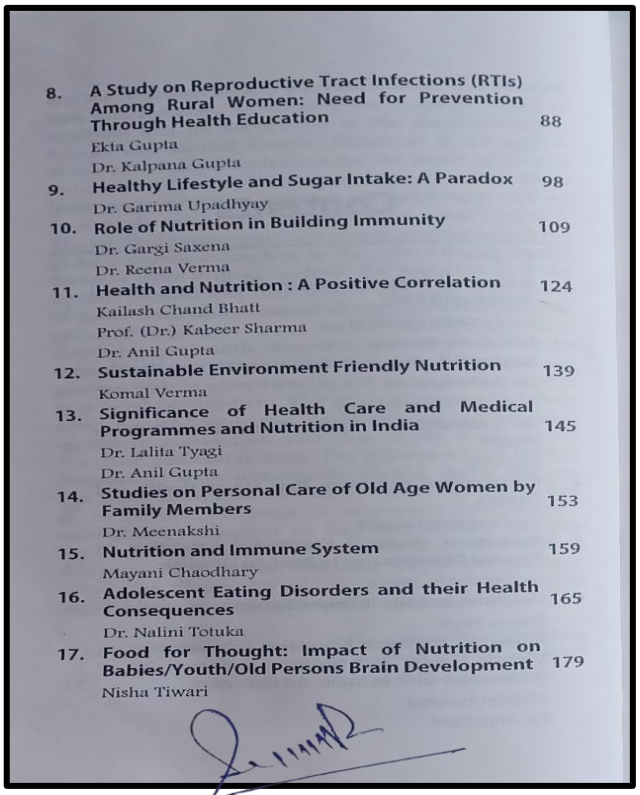

8. A Study on Reproductive Tract Infections (RTIs) Among Rural Women: Need for Prevention Through Health Education 88
Ekta Gupta
Dr. Kalpana Gupta

9. Healthy Lifestyle and Sugar Intake: A Paradox 98
Dr. Garima Upadhyay

10. Role of Nutrition in Building Immunity 109
Dr. Gargi Saxena
Dr. Reena Verma

11. Health and Nutrition : A Positive Correlation 124
Kailash Chand Bhatt
Prof. (Dr.) Kabeer Sharma
Dr. Anil Gupta

12. Sustainable Environment Friendly Nutrition 139
Komal Verma

13. Significance of Health Care and Medical Programmes and Nutrition in India 145
Dr. Lalita Tyagi
Dr. Anil Gupta

14. Studies on Personal Care of Old Age Women by Family Members 153
Dr. Meenakshi

15. Nutrition and Immune System 159
Mayani Chaodhary

16. Adolescent Eating Disorders and their Health Consequences 165
Dr. Nalini Totuka

17. Food for Thought: Impact of Nutrition on Babies/Youth/Old Persons Brain Development 179
Nisha Tiwari

Dr. Satendra Kumar Pandey
Co-ordinator, NAAC/IQAC
P.S.B. Rajkiya Mahavidyalaya
Naughar, Lambgaon

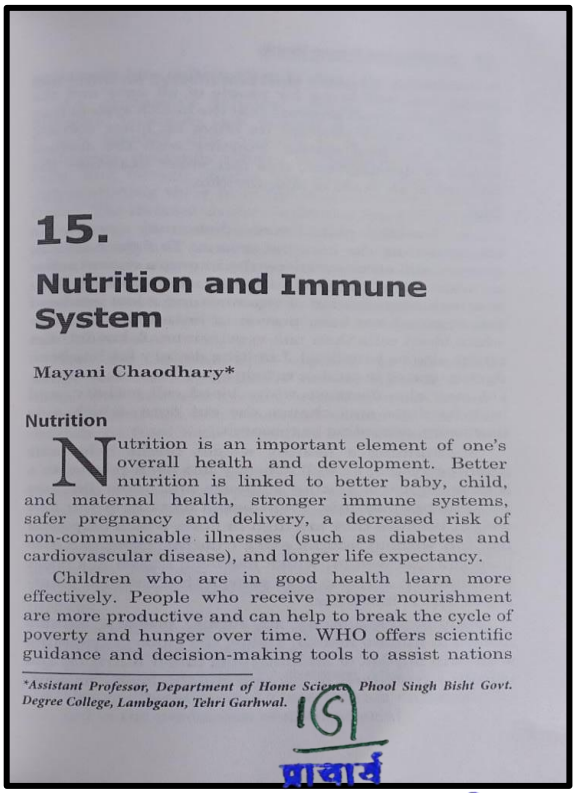

15.

Nutrition and Immune System

Mayani Chaodhary*

Nutrition

Nutrition is an important element of one's overall health and development. Better nutrition is linked to better baby, child, and maternal health, stronger immune systems, safer pregnancy and delivery, a decreased risk of non-communicable illnesses (such as diabetes and cardiovascular disease), and longer life expectancy.

Children who are in good health learn more effectively. People who receive proper nourishment are more productive and can help to break the cycle of poverty and hunger over time. WHO offers scientific guidance and decision-making tools to assist nations

*Assistant Professor, Department of Home Science, Phool Singh Bisht Govt. Degree College, Lambgaon, Tehri Garhwal.

प्राचार्य
फूल सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
नौघर, लम्बगाँव